स्नातक राजनीति विज्ञान

(बी०ए० पंचम सेमेस्टर)

लघु शोध प्रबंध कार्य

(Research Dissertation)

शोध प्रबंध प्रस्ताव एवं लघु शोध प्रबंध कार्य हेतु दिशानिर्देश

(Guidelines for Synopsis and Dissertation)

BA-5th Semester (Course Code: BA– 23)

अध्ययन मंडल

अध्यक्ष **संयोजक**

कुलपति **निदेशक समाज विज्ञान विद्याशाखा**

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी

पाठ्यक्रम लेखन एवं समन्वयक

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय ,हल्द्वानी

प्रकाशन वर्ष : 2025

Published by: उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, नैनीताल-263139

…………………………………………………………………

सर्वाधिकार सुरक्षित | इस प्रकाशन का कोई भी अंश उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है |

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY

श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्

शिक्षार्थियों हेतु दिशानिर्देश

(Guidelines for Learners)

- बी॰ ए॰ पंचम सेमेस्टर में शिक्षार्थियों को शोध प्रबन्ध प्रस्ताव (Dissertation Proposal) एवं लघु शोध प्रबन्ध कार्य (Dissertation) करने हेतु अपने अध्ययन केन्द्र के शैक्षिक परामर्शदाता विश्वविद्यालय अथवा महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विषय के प्राध्यापक से मार्गदर्शन प्राप्त करना होगा। अतः शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने अध्ययन केन्द्र पर राजनीति विज्ञान के शैक्षिक परामर्शदाता से सम्पर्क कर मार्गदर्शन प्राप्त करें।
- सर्वप्रथम शिक्षार्थियों को एक शोध प्रबन्ध प्रस्ताव तैयार कर राजनीति विज्ञान की निम्नलिखित मेल आईडी० पर प्रेषित करना होगा **dopsc@uou.ac.in**
- विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा, शोध प्रबन्ध प्रस्ताव का अवलोकन कर आवश्यक दिशानिर्देश एवं सुझाव, शोध प्रबन्ध प्रस्ताव उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय को प्रेषित करने की अंतिम तिथि के एक सप्ताह पश्चात विश्वविद्यालय की वेब साईट पर अपलोड कर दिए जाएँगे |
- जिन शिक्षार्थियों का शोध प्रबन्ध प्रस्ताव विश्वविद्यालय द्वारा अस्वीकृत कर दिया जायेगा ,उन शिक्षार्थियों को अपना शोध प्रबन्ध प्रस्ताव आवश्यक सुधार के साथ एक सप्ताह के भीतर पुनः विश्वविद्यालय (only soft copy) को प्रेषित करना होगा |
- कोई भी लघु शोध प्रबंध प्रस्ताव, जो विश्वविद्यालय द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया हो उसका शोध प्रबंध, लघु शोध प्रबंध प्रस्ताव की स्वीकृति के बिना किसी भी परिस्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा |
- विश्वविद्यालय द्वारा शोध प्रबन्ध प्रस्ताव की स्वीकृत की पुष्टि हो जाने पर ही अपना शोध कार्य प्रारंभ करें |
- शोध प्रबन्ध प्रस्ताव की स्वीकृति के पश्चात विभाग द्वारा शिक्षार्थी को उनके पर्यवेक्षक आवंटित किए जायेंगें| शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने पर्यवेक्षक से संपर्क करेंगे और उनके मार्गदर्शन में कार्य करेंगे|
- शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने पर्यवेक्षक के निर्देशन में नियत समय के भीतर अपना शोध कार्य पूर्ण करेंगे|
- शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपना शोध अध्ययन स्वंय करें। नकल किया गया कार्य स्वीकार नहीं किया जायेगा।

➢ यदि विश्वविद्यालय द्वारा किन्हीं दो शिक्षार्थियों के शोध प्रबन्ध का विषय एवं क्षेत्र समान पाया गया अथवा अनुवाद करके दूसरे विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत किया गया तो उनका शोध प्रबन्ध निरस्त कर दिया जायेगा।

➢ लघु शोध प्रबंध कार्य में मार्गदर्शन हेतु आपके अध्ययन केन्द्र द्वारा कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा।

➢ शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने शोध प्रबन्ध प्रस्ताव एवं शोध प्रबन्ध कार्य की दो प्रतियाँ तैयार करें जिसमें से एक विश्वविद्यालय हेतु एवं दूसरी विद्यार्थियों के स्वयं के उपयोग के लिए होगी।

➢ आपका लघु शोध प्रबंध कार्य हिंदी अथवा अंग्रेजी भाषा में डबल स्पेस, फॉन्ट साईज-14 में ए- फोर पेपर- साईज़ में होना चाहिए।

➢ लघु शोध प्रबंध टाईप होने के पश्चात आपके द्वारा पुनः टाइपिंग अशुद्धियों को देखकर उनको शुद्ध करा लिया जाए। शोध प्रबन्ध कार्य में पृष्ठ संख्या अवश्य अंकित करें |

➢ लघु शोध प्रबंध कार्य की बाइंडिंग हार्ड कवर पेज के साथ होनी चाहिए।

➢ लघु शोध प्रबंध के प्रथम पन्ने पर शिक्षार्थी का नाम, नामांकन संख्या व स्टडी सेंटर का पूरा पता आदि उल्लिखित होना चाहिए एवं पर्यवेक्षक का पूरा नाम भी लिखा होना चाहिए।जिसका प्रारूप इस निर्देशिका के अंत में संलग्न है।

➢ शिक्षार्थियों को शोध प्रबन्ध के साथ अपने पर्यवेक्षक का एक बायो-डेटा अनिवार्य रूप से संलग्न करना होगा|

➢ लघु शोध प्रबंध कार्य के शुरुआत में शिक्षार्थियों को इस पुस्तिका के अन्तिम भाग में संलग्न तीन परफ़ोर्मा को भरकर संलग्न करना अत्यंत आवश्यक है।

➢ लघु शोध प्रबंध कार्य प्राथमिक तथ्यों द्वितीयक स्रोतों पर आधारित होना चाहिए |

आवश्यक तिथियाँ

- लघु शोध प्रबंध से सम्बंधित आवश्यक तिथियाँ विश्वविद्यालय की वेब साईट पर उपलब्ध होंगी |

➢ शिक्षार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपना लघु शोध प्रबंध प्रस्ताव उक्त मेल आईडी पर प्रेषित करें **dopsc@uou.ac.in**|

- नियत तिथि के पश्चात प्रेषित किये गए लघु शोध प्रबंध कार्य किसी भी दशा में विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकार नहीं किये जाएँगे
- नियत तिथि के पश्चात भेजे गए लघु शोध प्रबंध कार्य अगले सत्र में बैक पेपर परीक्षा के माध्यम से स्वीकार किये जाएँगे .

प्रस्तावना

(Introduction)

राजनीति विज्ञान के शिक्षार्थियों से अपेक्षा है कि वे अपने पाठ्यक्रम के दौरान अर्जित ज्ञान को व्यावहारिक धरातल पर उतारें और इसे शोध व विश्लेषण की दिशा में विकसित करें। लघु लघु शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य छात्रों में राजनीतिक विषयों पर शोध करने की समझ, क्षमता और रुचि को बढ़ाना है। छात्रों को यह सलाह दी जाती है कि वे अपने आस-पास के सामाजिक, राजनीतिक मुद्दों के साथ-साथ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय समसामयिक विषयों पर भी ध्यान दें और उसी के आधार पर शोध विषय का चयन करें।

यह लघु शोध प्रबंध विशेष रूप से छात्रों को स्थानीय शासन व्यवस्था, पंचायतें, नगर निकाय, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण, लोकतांत्रिक प्रक्रियाएं, मतदाता व्यवहार, राजनीतिक दलों की कार्यप्रणाली, नीति निर्माण जैसे विषयों पर गंभीर विश्लेषण करने के लिए प्रेरित करता है। साथ ही भारतीय राजनीति विज्ञान से जुड़े विविध आयामों जैसे – लोकतंत्र, सामाजिक न्याय, अधिकारों की राजनीति, विकास और पर्यावरणीय नीतियों पर शोध करने का अवसर देता है।

शोध कार्य का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि स्थानीय और राष्ट्रीय राजनीतिक संरचनाओं, प्रक्रियाओं, सामाजिक-राजनीतिक गतिशीलता को प्रत्यक्ष समझना और अनुभव करना भी है। इस प्रक्रिया में 'ऊपर से नीचे' वाले नजरिए से इतर 'नीचे से ऊपर' दृष्टिकोण को अपनाने पर बल दिया गया है ताकि उन समुदायों, मुद्दों और समूहों को भी समझा जा सके जो आमतौर पर राजनीतिक विमर्श में हाशिए पर रह जाते हैं।

यह शोध कार्य छात्रों को आलोचनात्मक सोच, विश्लेषण क्षमता और अनुसंधान के नवाचारों से लैस करता है। इसके साथ ही अंतरविषयक दृष्टिकोण और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से राजनीति विज्ञान को समझने का व्यापक और समावेशी नजरिया विकसित करने में मदद करता है।

लघु शोध प्रबंध हेतु सबसे पहले छात्रों को एक प्रस्ताव (Dissertation Proposal) बनाना होगा, जिसे विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत कराए बिना शोध कार्य शुरू नहीं किया जा सकता। प्रस्ताव की स्वीकृति के बाद ही फाइनल लघु शोध प्रबंध तैयार किया जाएगा। इस पूरी प्रक्रिया में छात्रों को अपने अध्ययन केंद्र पर शैक्षिक परामर्शदाता (Academic Counsellor) से मार्गदर्शन लेना जरूरी होगा, जो उन्हें किसी योग्य प्राध्यापक या विशेषज्ञ से जोड़ेंगे। यही विशेषज्ञ शोध पर्यवेक्षक (Facilitator) की भूमिका निभाएंगे और शोध कार्य को गुणवत्ता के साथ पूरा करने में मार्गदर्शन देंगे।

इसलिए शिक्षार्थियों से अपेक्षा है कि वे इस प्रक्रिया को गंभीरता से लें, पर्यवेक्षक के साथ लगातार संवाद में रहें और दिए गए सुझावों का अनुसरण करें ताकि शोध कार्य न केवल पाठ्यक्रम की आवश्यकता पूरी करे, बल्कि उनकी अकादमिक समझ और शोध क्षमता को भी मजबूत बनाए।

प्रयोजन

(Purpose)

राजनीति विज्ञान के पाठ्यक्रम में लघु शोध प्रबंध को शामिल करने का एक मात्र उद्देश्य— छात्रों को राजनीति विज्ञान की अवधारणाओं, सिद्धांतों और इसकी विविध शाखाओं की गहराई से समझ विकसित कराना है। यह लघु शोध प्रबंध छात्रों को ये अवसर देता है कि वे अपनी रुचि के किसी एक विषय पर फोकस करें, जिसमें वे भविष्य में विशेषज्ञता हासिल करना चाहते हैं।

अब तक आपने राजनीति विज्ञान के पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों जैसे- शासन व्यवस्था, लोकतंत्र, सार्वजनिक नीति, अंतरराष्ट्रीय संबंध, राजनीतिक विचारधारा, मानवाधिकार, और स्थानीय स्वशासन आदि के बारे में पढ़ा है। इस शोध कार्य के जरिए आप इनमें से किसी भी मुद्दे पर गंभीरता से काम कर सकते हैं।

साथ ही, आज के बदलते राजनीतिक परिदृश्य में जो समसामयिक और प्रासंगिक मुद्दे उभर रहे हैं — जैसे पर्यावरण नीति, चुनावी सुधार, सामाजिक न्याय, नीति निर्माण में तकनीक की भूमिका, लैंगिक समानता, या युवाओं की राजनीतिक भागीदारी — उन पर भी शोध किया जा सकता है।

असल में, इस लघु शोध प्रबंध का उद्देश्य सिर्फ अकादमिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि छात्रों को अपने आस-पास की राजनीतिक जटिलताओं को समझने, उनका विश्लेषण करने और समाधान तलाशने की एक व्यावहारिक समझ देना है।

उद्देश्य

(Objectives)

शोध प्रबन्ध के मुख्य उद्देश्य

(Main Objectives of Dissertation)

1. स्थानीय एवं राष्ट्रीय सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों से अवगत करना

2. अनुसंधान कौशल विकसित करना

3. आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करना

4. नवाचार को बढ़ावा देना

5. शैक्षणिक और सामुदायिक क्षेत्र के बीच पुल का निर्माण

शोध प्रबन्ध के विशेष उद्देश्य

(Special Objectives of Dissertation)

- शोध समस्या का निर्माण करना सीखना।
- गहन साहित्य सर्वेक्षण द्वारा शोध हेतु उपयुक्त विषय का चुनाव करना।
- परिकल्पना का निर्माण करने की प्रक्रिया से अवगत होना।
- शोध-प्रारुप निर्माण की प्रक्रिया को जानना।
- निदर्शन प्रारुप निर्धारण को समझाना।
- आँकड़ा संकलन की विधि से अवगत होना।
- प्रोजेक्ट का सम्पादन करना सीखना।
- आँकड़ों का विश्लेषण करने का ज्ञान अर्जित करना।
- परिकल्पनाओं का परीक्षण सीखना।
- सामान्यीकरण और विवेचन
- रिपोर्ट तैयार करना या परिणामों का प्रस्तुतीकरण यानि निष्कर्षों का औपचारिक लेखन लिखने की कला को सीखना।

लघु शोध प्रबंध कार्य से आशय

लघु शोध प्रबंध एक अप्रत्यक्ष/परोक्ष रूप में, एवं सक्रिय कार्य करने की एक विधि है। जो संगठित रूप से एक विषय के बारे में क्रमबद्ध, विस्तृत एवं नयी जानकारी प्राप्त करने के लिए सहायता प्रदान करती है। राजनीति विज्ञान में लघु शोध प्रबंध कार्य अध्ययन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि यह व्याख्यान और पाठ्यपुस्तक-आधारित अध्ययन के पारंपरिक तरीकों से परे जाकर विषय में सक्रिय रूप से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है। यह शिक्षार्थियों को महत्वपूर्ण कौशल विकसित करने, ऐतिहासिक अध्ययन को वास्तविक जीवन के संदर्भों से जोड़ने, और विषय के साथ गहरे स्तर पर जुड़ने में मदद करता है।

1. सक्रिय शिक्षा और आलोचनात्मक सोच

- **व्यावहारिक अनुभव:** लघु शोध प्रबंध कार्य छात्रों को राजनीतिक अनुसंधान की पूरी प्रक्रिया से जोड़ता है। इसमें नीति दस्तावेज़ों, चुनावी आंकड़ों, संसदीय बहसों, केस स्टडी और जमीनी साक्षात्कार का विश्लेषण शामिल है, जिससे छात्र वास्तविक राजनीतिक परिघटनाओं को समझने में सक्षम होते हैं।
- **स्थापित राजनीतिक धारणाओं पर सवाल उठाना:** छात्र पारंपरिक राजनीतिक संरचनाओं, संस्थानों और विचारधाराओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करना सीखते हैं। वे यह समझ पाते हैं कि सत्ता, प्रतिनिधित्व और संसाधनों का बंटवारा कैसे होता है, और किन समूहों की आवाज़ अक्सर दबा दी जाती है।
- **समस्या समाधान कौशल:** जमीनी राजनीतिक समस्याओं — जैसे स्थानीय शासन की विफलताएं, नीति निर्माण की चुनौतियां या राजनीतिक भागीदारी में कमी — का विश्लेषण करके छात्र व्यावहारिक समाधानों की तलाश करते हैं।

2. सिद्धांत को व्यावहारिकता से जोड़ना

- **राजनीतिक विश्लेषण की विधियाँ:** शोध कार्य में छात्र कक्षा में पढ़े गए सिद्धांतों — जैसे लोकतंत्र, सत्ता संरचना, नीति विश्लेषण, सार्वजनिक प्रशासन — को वास्तविक केस स्टडी, नीति समीक्षा, और साक्षात्कार के जरिए लागू करना सीखते हैं।
- **राजनीति विज्ञान की प्रासंगिकता को समझना:** स्थानीय और राष्ट्रीय राजनीतिक घटनाओं, आंदोलनों, चुनावों, और नीतिगत फैसलों का अध्ययन करके छात्र यह समझते हैं कि राजनीतिक सिद्धांत जमीन पर कैसे काम करते हैं और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन में उनकी क्या भूमिका होती है।

3. अनुसंधान कौशल का विकास

- **प्राथमिक स्रोतों से जुड़ाव:** छात्र फील्ड वर्क, केस स्टडी, साक्षात्कार, सर्वेक्षण और नीति दस्तावेज़ों जैसे प्राथमिक स्रोतों के साथ काम करना सीखते हैं। इससे उनमें डेटा इकट्ठा करने, उसे व्यवस्थित करने और उसका विश्लेषण करने की समझ विकसित होती है।
- **शोध कार्यप्रणाली में दक्षता:** लघु शोध प्रबंध छात्रों को राजनीतिक विश्लेषण की विविध पद्धतियों — जैसे तुलनात्मक अध्ययन, नीति विश्लेषण, संस्थागत अध्ययन, व्यवहारिक दृष्टिकोण — में दक्ष बनाता है।
- **डिजिटल साक्षरता:** शोध के दौरान छात्र डेटा एनालिटिक्स, इन्फोग्राफिक्स, ऑनलाइन सर्वे टूल्स, और डिजिटल आर्काइव्स जैसे संसाधनों का प्रयोग करना सीखते हैं, जो उन्हें समकालीन शोध की मांगों के अनुरूप तैयार करता है।

4. संचार कौशल को बढ़ावा देना

- **प्रस्तुति और लेखन कौशल:** छात्र अपने शोध निष्कर्षों को अकादमिक लेखन, प्रजेंटेशन, रिपोर्ट, नीति सुझावों और मल्टीमीडिया माध्यमों से प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना सीखते हैं।
- **सहयोगात्मक कार्य:** कई बार शोध परियोजनाएं सामूहिक रूप से होती हैं, जिससे छात्रों में टीमवर्क, संवाद, और सहकर्मी सहयोग की भावना विकसित होती है।

- **सामुदायिक सहभागिता:** जब छात्र स्थानीय या क्षेत्रीय राजनीतिक मुद्दों पर शोध करते हैं, तो वे समुदायों के साथ संवाद स्थापित करना सीखते हैं। इससे शोध का सामाजिक प्रभाव भी बढ़ता है।

5. सहानुभूति और समावेशिता विकसित करना

- **विविध दृष्टिकोणों की समझ:** शोध करते हुए छात्र समाज के उन वर्गों की स्थितियों को भी जान पाते हैं जो आमतौर पर नीति निर्माण या राजनीतिक विमर्श से बाहर रह जाते हैं, जैसे वंचित, हाशिए के समुदाय या कमजोर तबके।
- **रुढ़ियों को चुनौती:** छात्र समाज में व्याप्त सत्ता, भेदभाव और सामाजिक असमानताओं की परतों को समझते हैं और उनके सरलीकृत विश्लेषण से आगे जाकर गहराई से विश्लेषण करना सीखते हैं।

6. रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहित करना

- **रचनात्मक प्रस्तुतीकरण:** छात्र शोध को प्रस्तुत करने के लिए केस स्टडी वीडियो, पॉलिसी ब्रीफ, इन्फोग्राफिक्स, या डिजिटल डॉक्युमेंट्री जैसे नए तरीके अपनाते हैं।
- **अंतर्विषयक दृष्टिकोण:** राजनीति विज्ञान में शोध करते हुए छात्र समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, सार्वजनिक प्रशासन, मीडिया स्टडीज जैसे अन्य विषयों की अवधारणाओं का भी सहारा लेते हैं, जिससे उनका विश्लेषण और गहरा होता है।

7. **भविष्य के करियर की तैयारी**

- **कौशल विकास:** शोध प्रक्रिया में छात्र जिन क्षमताओं को विकसित करते हैं — जैसे विश्लेषण, नीति समीक्षा, आंकड़ों का अध्ययन, प्रभावी लेखन और संवाद — वे अकादमिक क्षेत्र, प्रशासनिक सेवाओं, पॉलिसी रिसर्च, मीडिया, और सामाजिक संगठनों में उनके करियर को मजबूती देते हैं।
- **पोर्टफोलियो निर्माण:** लघु शोध प्रबंध छात्रों के लिए एक ठोस शैक्षणिक उपलब्धि होता है, जिसे वे अपनी प्रोफेशनल प्रोफाइल, नौकरी या उच्च शिक्षा में दाखिले के दौरान प्रस्तुत कर सकते हैं।

8. राजनीति विज्ञान को व्यक्तिगत और प्रासंगिक बनाना

- **स्थानीय राजनीति से जुड़ाव:** जब छात्र अपने आसपास के राजनीतिक मुद्दों, संस्थाओं, और प्रक्रियाओं पर शोध करते हैं तो राजनीति विज्ञान सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं रह जाता, बल्कि उनके जीवन का अनुभव बन जाता है।
- **समकालीन राजनीति की समझ:** छात्र यह समझ पाते हैं कि किस तरह बीते कुछ दशकों में हुए राजनीतिक निर्णय, नीतियां, और आंदोलनों ने आज के समाज और राजनीति को गढ़ा है। इससे वे राजनीति को सिर्फ अध्ययन का विषय नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का औजार भी समझने लगते हैं।

मुख्य अवधारणाएँ

1. **नीति विश्लेषण (Policy Analysis):**
   शिक्षार्थियों के लिए यह समझना आवश्यक होगा कि किसी भी सार्वजनिक नीति का निर्माण, कार्यान्वयन और प्रभाव किस तरह से होता है। नीति विश्लेषण के ज़रिए वे यह सीखते हैं कि कौन सी नीति किन वर्गों को लाभ देती है, किसे नुकसान पहुंचाती है और क्यों।
2. **सत्ता और प्रतिनिधित्व (Power and Representation):**
   राजनीति विज्ञान में सत्ता का बंटवारा, प्रतिनिधित्व की प्रकृति, और लोकतांत्रिक संस्थाओं में वंचित समुदायों की भागीदारी का अध्ययन केंद्रीय महत्व रखता है। इससे शिक्षार्थी समझ सकेंगें कि किनकी आवाज़ सुनी जाती है और कौन पीछे छूट जाता है।
3. **लोकतंत्र और भागीदारी (Democracy and Participation):**
   यह अवधारणा शिक्षार्थियों को लोकतंत्र की प्रक्रियाओं, जैसे चुनाव, नागरिक अधिकार, और जन सहभागिता के स्वरूप को समझने में मदद करती है। शोध में यह देखा जाता है कि लोकतंत्र कितनी गहराई तक समाज के अलग-अलग तबकों तक पहुंचता है।
4. **सामाजिक न्याय और समानता (Social Justice and Equity):**
   राजनीतिक व्यवस्था में सामाजिक न्याय और समानता की अवधारणा का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है। शोध में यह जांचा जा सकता है कि आरक्षण, कल्याणकारी योजनाएं या कानून सामाजिक न्याय के उद्देश्य को कितना पूरा करते हैं।
5. **राजनीतिक संस्थानों का अध्ययन (Study of Political Institutions):**
   पंचायत, नगर निकाय, विधानसभाएं, संसद, न्यायपालिका जैसी संस्थाओं की भूमिका, उनके बीच संबंध, और उनके कामकाज की प्रभावशीलता को समझना राजनीति विज्ञान का मूल हिस्सा है।

शोध प्रबन्ध प्रस्ताव /लघु शोध प्रबंध कार्य कब प्रारम्भ किया जाएगा

(When Dissertation/Dissertation will begin)

- अपनी रूचि के शोध विषय (Research Topic) का चयन करें।
- चयनित शोध विषय पर अपना शोध प्रस्ताव तैयार कर विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग को ईमेल **dopsc@uou.ac.in** पर प्रेषित करेंगे।
- प्रेषित शोध प्रस्ताव को विभाग द्वारा स्वीकृति के पश्चात ही शिक्षार्थी अपने आवंटित पर्यवेक्षक से संपर्क करेंगे।
- अध्ययन केन्द्र पर अपने आवंटित शैक्षिक परामर्शदाता /फैसिलिटेटर से मार्गदर्शन प्राप्त करना होगा।
- अध्ययन करना।(Conducting the Study)
- प्रतिवेदन (रिपोर्ट) तैयार करना।
- अपने पर्यवेक्षक से समय-समय पर सलाह एवं मार्गदर्शन प्राप्त करें।

विषय/शीर्षक का चुनाव (Selection of Topic)

किसी भी शोध कार्य की शुरुआत हमेशा विषय चयन से होती है। विषय चुनते समय यह ध्यान रखना जरूरी है कि वह आपकी रुचि के अनुसार हो और साथ ही आपके पाठ्यक्रम की विषयवस्तु से भी सम्बंधित हो। इससे शोध के दौरान विषय की समझ गहरी होती है।

विषय चयन करते समय उसकी उपयुक्तता, सामाजिक-राजनीतिक प्रासंगिकता, उपलब्ध अध्ययन सामग्री, तय समय सीमा और खर्च का भी आकलन कर लेना चाहिए। साथ ही, तथ्य और आंकड़े इकट्ठा करने के लिए किस क्षेत्र में जाकर काम करना होगा, यह भी पहले से तय कर लें। इससे समय और संसाधनों की बर्बादी से बचा जा सकता है। आप राज्य, जिला या किसी स्थानीय क्षेत्र का चुनाव अपनी सुविधा, पहुंच और विषय की जरूरत के अनुसार कर सकते हैं।

विषय /शीर्षक का चयन से सम्बंधित विस्तृत जानकारी नीचे दी गयी है। कृपया उसका अवलोकन करें।

शोध से सम्बन्धित विषय (Topics Related to Research)

शोध कार्य की सबसे पहली और जरूरी कड़ी है — विषय का चयन। इसलिए छात्रों से अपेक्षा है कि वे ऐसा विषय चुनें जो न केवल उनकी रुचि का हो बल्कि उनके पाठ्यक्रम की विषयवस्तु से भी सीधे जुड़ता हो। इसके साथ ही यह देखना भी जरूरी है कि विषय प्रासंगिक है या नहीं, उस पर उपलब्ध अध्ययन सामग्री कितनी है, उसे तय समय सीमा में पूरा किया जा सकता है या नहीं, और उसमें कितना खर्च आएगा।

राजनीति विज्ञान में शोध विषय का चयन बहुत सोच-समझ कर करना चाहिए क्योंकि यही तय करेगा कि आपका अध्ययन कितना गहरा, व्यावहारिक और प्रभावशाली होगा। नीचे कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए हैं जो विषय चुनने में आपकी मदद कर सकते हैं:

1. अपने शोध का उद्देश्य और दायरा समझें

- **पाठ्यक्रम की दिशा:** यह सुनिश्चित करें कि जो विषय आप चुन रहे हैं वह आपके कोर्स और विश्वविद्यालय के दिशानिर्देशों के अनुरूप है।
- **शोध का लक्ष्य:** यह तय करें कि आपका शोध स्थानीय राजनीति, नीति निर्माण, शासन व्यवस्था, राजनीतिक व्यवहार, या किसी खास राजनीतिक सिद्धांत के विश्लेषण पर केंद्रित होगा।

2. अपनी रुचियों और जिज्ञासा पर विचार करें

- ऐसा विषय चुनें जो आपके अंदर स्वाभाविक रुचि पैदा करे। आपकी जिज्ञासा ही शोध प्रक्रिया को निरंतर प्रेरणा देती रहेगी।
- समकालीन राजनीतिक घटनाओं, नीतियों, आंदोलनों और चुनावी रुझानों से जुड़े विषयों को देखें, ताकि शोध में ताजगी बनी रहे।
- स्थानीय, क्षेत्रीय या राज्य स्तरीय मुद्दों पर शोध करें, क्योंकि वहां से जुड़ी जानकारी सुलभ भी होगी और उसका व्यावहारिक महत्व भी रहेगा।

3. स्पष्ट शोध प्रश्न तैयार करें

- किसी सामान्य रुचि से शुरुआत करें और उसे धीरे-धीरे एक केंद्रित, सटीक शोध प्रश्न में बदलें।
- विषय इतना संकीर्ण न हो कि सामग्री ही न मिले, और इतना व्यापक भी न हो कि समय कम पड़ जाए।
- प्रश्न ऐसा होना चाहिए जिसे उपलब्ध संसाधनों और समय में ठीक से शोध कर पूरा किया जा सके।

4. स्रोतों की उपलब्धता जांचें

- **प्राथमिक स्रोत:** जैसे – नीति दस्तावेज, चुनावी डेटा, सरकारी रिपोर्ट, इंटरव्यू, सर्वे आदि।
- **द्वितीयक स्रोत:** जैसे – शोध पत्र, किताबें, थिंक टैंक रिपोर्ट, समाचार पत्र, नीति विश्लेषण।
- स्थानीय संसाधनों जैसे – जिला प्रशासन के रिकॉर्ड, लोकल NGOs, पंचायत कार्यालय, और विश्वविद्यालय पुस्तकालयों का भी लाभ उठाएं।

5. विषय की प्रासंगिकता और महत्व पर विचार करें

- ऐसा विषय चुनें जो आज के राजनीतिक परिदृश्य में अर्थ रखता हो।
- विषय में कुछ नया दृष्टिकोण या अनछुआ पहलू जोड़ने की कोशिश करें।
- सोचें कि आपका शोध समाज, नीति निर्माताओं, या शैक्षणिक जगत में किस तरह का योगदान दे सकता है।

6. शिक्षकों और साथियों से चर्चा करें

- अपने विचार अपने गाइड, शिक्षक या सहपाठियों के साथ साझा करें। इससे विषय को और बेहतर करने के सुझाव मिल सकते हैं।
- कई बार दूसरों की राय से आपके शोध के दायरे या संभावित चुनौतियों का अंदाजा लग जाता है।

7. व्यवहार्यता का आकलन करें

- तय करें कि आपके पास शोध पूरा करने के लिए पर्याप्त समय, डेटा सोर्सेज, और फील्ड वर्क की सुविधा है या नहीं।
- अगर विषय बहुत बड़ा है तो उसे सीमित दायरे में बांध लें, जैसे एक विशेष क्षेत्र, समुदाय या अवधि तक।

8. ऐसा विषय चुनें जो आलोचनात्मक सोच को उकसाए

- ऐसा मुद्दा चुनें जिसमें मतभेद, बहस, और कई दृष्टिकोण मौजूद हों। इससे शोध में गहराई आएगी।
- सोचें कि कैसे आपके विषय में लिंग, जाति, वर्ग, क्षेत्रीयता जैसे आयाम जुड़े हैं।

विषय-वस्तु के आधार पर विषयों के कुछ उदाहरण:

1. लोकतंत्र और शासन (Democracy and Governance)

- भारत में स्थानीय शासन और लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण: उत्तराखंड का एक केस स्टडी
- ग्राम पंचायतों में महिला आरक्षण का राजनीतिक नेतृत्व पर प्रभाव

- उत्तराखंड में नगरीय निकायों की कार्यप्रणाली और जवाबदेही का मूल्यांकन
- भारतीय चुनावी प्रणाली में सुधारों की आवश्यकता: चुनौतियां और संभावनाएं

2. सार्वजनिक नीति और प्रशासन (Public Policy and Administration)

- भारत में शिक्षा नीति 2020 का कार्यान्वयन: नीति और जमीनी हकीकत
- उत्तराखंड में जल नीति और जल प्रबंधन: एक राजनीतिक विश्लेषण
- आपदा प्रबंधन और स्थानीय शासन की भूमिका: उत्तराखंड में अध्ययन
- पर्यावरण नीति और विकास का द्वंद्व: उत्तराखंड में जलविद्युत परियोजनाओं का विश्लेषण

3. सामाजिक न्याय और समानता (Social Justice and Equity)

- भारत में आरक्षण नीति का सामाजिक न्याय पर प्रभाव: एक आलोचनात्मक अध्ययन
- उत्तराखंड में अनुसूचित जाति/जनजाति के राजनीतिक सशक्तिकरण की स्थिति
- लैंगिक न्याय और भारतीय राजनीति: संसद में महिला आरक्षण बिल की राजनीति
- सामाजिक आंदोलनों का नीति निर्माण में योगदान: भारत में दलित आंदोलन का अध्ययन

4. राजनीतिक व्यवहार और संस्कृति (Political Behaviour and Culture)

- उत्तराखंड में मतदान व्यवहार का सामाजिक-सांस्कृतिक विश्लेषण
- युवा मतदाताओं का भारतीय राजनीति में योगदान और प्रवृत्ति
- भारतीय राजनीति में जातिगत समीकरण और चुनावी परिणामों पर प्रभाव
- मीडिया और राजनीतिक धारणाओं का निर्माण: उत्तराखंड विधानसभा चुनावों का विश्लेषण

5. अंतरराष्ट्रीय संबंध और विदेश नीति (International Relations and Foreign Policy)

- भारत की विदेश नीति में पड़ोसी प्रथम सिद्धांत का मूल्यांकन
- भारत-नेपाल संबंधों का सामरिक और राजनीतिक विश्लेषण
- भारत में जल कूटनीति: ब्रह्मपुत्र नदी विवाद का राजनीतिक परिप्रेक्ष्य
- बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत की भूमिका: जी20 और ग्लोबल साउथ

6. पर्यावरण और राजनीति (Environmental Politics)

- उत्तराखंड में पर्यावरणीय आंदोलनों की राजनीति: चिपको आंदोलन से आज तक
- जलवायु परिवर्तन और नीति निर्माण में भारत की भूमिका
- जैव विविधता संरक्षण में राजनीतिक इच्छाशक्ति की भूमिका: उत्तराखंड में वन नीति का विश्लेषण

7. नवाचार, तकनीक और राजनीति (Innovation, Technology and Politics)

- डिजिटल इंडिया और ई-गवर्नेंस: लोकतंत्र में टेक्नोलॉजी का योगदान
- भारत में सोशल मीडिया और चुनावी राजनीति का बदलता चेहरा
- सूचना का अधिकार (RTI) और शासन में पारदर्शिता: उत्तराखंड का अध्ययन

उपरोक्त सात प्रमुख विषय वस्तु शिक्षार्थियों के मार्गदर्शन के लिए प्रदान की गई हैं। उपरोक्त सात प्रमुख विषय वस्तु के अंतर्गत दिए गए उप-विषयों के अतिरिक्त शिक्षार्थी अपनी रूचि के अनुसार किसी अन्य उप-विषय का भी चयन कर सकते हैं।

अन्य सुझाव

- **लचीलापन बनाए रखें:** शोध करते हुए जैसे-जैसे नई जानकारियां मिलें, हो सकता है कि आपका नजरिया या दिशा बदलने की जरूरत पड़े। इसलिए विषय को समय-समय पर परखें और ज़रूरत हो तो उसमें संशोधन करने के लिए तैयार रहें।
- **रुचि और व्यवहारिकता का संतुलन रखें:** विषय में आपकी रुचि जरूरी है, लेकिन साथ ही यह भी देखें कि उस पर काम करना व्यावहारिक है या नहीं। यानी आपके पास जरूरी सामग्री, समय और संसाधन उपलब्ध हैं या नहीं।
- **सिर्फ ग्रेड तक सीमित न रहें:** ऐसा विषय चुनें जो आपके लिए सिर्फ अंक लाने का जरिया न हो बल्कि आपकी सोच, विश्लेषण क्षमता और राजनीति विज्ञान की गहरी समझ को भी विकसित करे। यह शोध आगे आपके करियर या उच्च शिक्षा में भी आपके लिए फायदेमंद हो।

इन चरणों का पालन करके, आप एक ऐसा राजनीति विज्ञान लघु शोध प्रबंध विषय चुन सकते हैं जो आकर्षक, प्रभावशाली और शैक्षणिक रूप से लाभदायक हो।

लघु शोध प्रबंध प्रस्ताव (Research Dissertation Proposal)

आपका प्रबन्ध प्रस्ताव 8-10 पन्नों का होना चाहिये। यह प्रत्ययात्मक रूपरेखा (Conceptual framework) का होना चाहिये। जो समस्या की प्रकृति को दर्शाते हुये होना चाहिये। जिसमें समस्या का चयन उद्देश्य(Objective), उपकल्पना (Hypothesis), समग्र एवं विनिदर्शन (Sampling) का विवरण होना चाहिए। आंकड़ा-संग्रह की विधियाँ,सारणीयन एवं अध्यायीकरण को सम्मिलित किया जाना चाहिये। समाज वैज्ञानिक होने के नाते आप से अपेक्षा की जाती है कि आप सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियों का प्रयोग करते हुये नये ज्ञान की खोज एवं पुराने ज्ञान के सत्यापन का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

लघु शोध प्रबंध प्रस्ताव लिखने हेतु प्रारूप (Proposal format to write dissertations)

- **शीर्षक का चुनाव (Selection of Topic) -** सर्वप्रथम लघु शोध प्रबंध प्रस्ताव बनाने हेतु एक शोध शीर्षक का चुनाव करना चाहिए
- **परिकल्पना का निर्माण (Formation of Hypothesis) –**शोध लघु शोध प्रबंध हेतु समस्या के आधार पर परिकल्पना / प्रकल्पना का निर्माण करना चाहिए। जैसे : "भारत में स्थानीय देवताओं की पूजा प्रथाओं ने पवित्र स्थलों और पर्यावरण संरक्षण के नियमों की स्थापना करके ऐतिहासिक रूप से जंगलों, जल स्रोतों और जैव विविधता के संरक्षण में योगदान दिया है।"
- **अध्ययन की उपयुक्तता (Relevance of the Study-** अध्ययन को क्यूँ चुना गया तथा इसकी उपयोगिता क्या है के बारे में स्पष्ट ब्यौरा प्रस्तुत करना चाहिए।
- **अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study) -** अध्ययन के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से लिखा जाना चाहिए। कि उक्त विषय को किये जाने के पीछे आपका उद्देश्य क्या है तथा आप इस अध्ययन को किन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु करना चाहते है।
- **अध्ययन हेतु प्रयोग प्रविधि (Methodology for Study) -** प्रस्तुत शोध अध्ययन में कौन-कौन सी शोध प्रविधियों का प्रयोग करेगें। यहाँ पर आपको उन प्रयोग की जाने वाली विधियों का स्पष्ट एंव विस्तार से वर्णन करना होगा।
- **शोध अभिकल्पना (Research Design) –** शोध प्रविधि में कौन सी शोध प्रचना का प्रयोग करेगें। जो आपके शोध कार्य की प्रकृति एंव उददेश्यों को फलीभूत करेगें उसके बारे में चर्चा करना चाहिए एवं परिभाषा देनी चाहिए।
- **तथ्य एकत्रित करने की तकनीक (Techniques of Data Collection) -** शोध अध्ययन में तथ्य एकत्रित करने हेतु दो विधियों का प्रयोग करते हैं।

प्राथमिक तथ्य एकत्रित करने की विधि Primary methods of data collection

प्राथमिक तथ्य एकत्रित करने हेतु कई विधियों का प्रयोग करते हैं। जिनमें कुछ अग्रलिखित है –

1. Survey Method सर्वेक्षण विधि

2. Interview Method साक्षात्कार विधि

3. Questionnaire Method (प्रश्नावली विधि)

4. Observation Method (अवलोकन विधि)

5. Focus Group Discussion (FGD) केंद्रित समूह चर्चा (एफ.जी.डी.)

6. Case Study Method प्रकरण अध्ययन विधि

7. Field Study / Field Research क्षेत्र अध्ययन / क्षेत्रीय अनुसंधान

8. Participant Observation सहभागी अवलोकन

9. Ethnographic Method नृविज्ञानात्मक विधि

द्वितीयक तथ्य एकत्रित करने की विधि Method's of Secondary data collection:

द्वितीयक तथ्य वे तथ्य होते है जो विभिन्न किताबों,पत्रिकाओं, समाचार पत्रों इत्यादि के माध्यम से एकत्रित किये जाते है इनका स्पष्ट निरूपण होना चाहिए।

1. Documentary Analysis दस्तावेज़ विश्लेषण
2. Content Analysis of Published Material प्रकाशित सामग्री का विषयवस्तु विश्लेषण
3. Use of Government Reports and Records सरकारी रिपोर्टों और अभिलेखों का उपयोग
4. Analysis of Historical Records ऐतिहासिक अभिलेखों का विश्लेषण
5. Library and Archival Research पुस्तकालय और अभिलेखागार अनुसंधान
6. Newspapers and Magazines समाचार पत्र और पत्रिकाएँ
7. Census Data and Statistical Reports जनगणना डेटा और सांख्यिकीय रिपोर्टें
8. Research Journals and Academic Articles शोध पत्रिकाएँ और शैक्षणिक लेख
9. NGO and International Organization Reports गैर-सरकारी संगठन और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टें
10. Online Databases and Repositories ऑनलाइन डेटाबेस और भंडार

इस प्रकार उपरोक्त शीर्षकों के अन्तर्गत शोध प्रबन्ध प्रस्ताव तैयार कर पर्यवेक्षक को प्रस्तुत करना चाहिए तथा पर्यवेक्षक के अनुमोदन के पश्चात अपना शोध कार्य शुरू करना चाहिए।

शोध प्रबन्ध हेतु प्रारूप (Outline of Research Project)

शोध प्रबन्ध लिखने के लिए सबसे पहले आवश्यक होता है कि अध्यायीकरण के अनुसार प्रतिवेदन किया जाए। इस प्रकार शोध प्रबन्ध तैयार करने हेतु अग्रलिखित शीर्षक दिये जा रहे है-

प्रस्तावना (Introduction) - इसमें शोध अध्ययन शीर्षक से सम्बन्धित तथ्यों को विस्तृत रूप से लिखना चाहिए तथा जो साहित्य जहां से लिये गये है उनका भी सन्दर्भ सूची में वर्णन करना चाहिए।

शोध अध्ययन की उपयुक्तता व उद्देश्य (Objectives and relevance of research study)

शोध निर्देशन में किसी भी शोध अध्ययन की उपयुक्तता और उद्देश्य को स्पष्ट करना बेहद जरूरी होता है। इससे शोध की दिशा, उसकी उपयोगिता और उस पर काम करने की तर्कसंगत वजहें स्पष्ट हो जाती हैं। राजनीति विज्ञान में शोध अध्ययन की उपयुक्तता और उद्देश्य को इस तरह समझा और निर्देशित किया जा सकता है:

1. शोध अध्ययन की उपयुक्तता (Relevance of Research Study)

- **सैद्धांतिक प्रासंगिकता:** शोध विषय राजनीति विज्ञान के किस सिद्धांत, अवधारणा या विमर्श से जुड़ा है, इसे स्पष्ट करना। जैसे लोकतंत्र, सत्ता, प्रतिनिधित्व, नीति निर्माण, सामाजिक न्याय, आदि।
- **समकालीन महत्व:** शोध का संबंध समकालीन राजनीतिक घटनाओं, मुद्दों या नीतिगत बहसों से कैसे है। जैसे — जलवायु परिवर्तन और नीति, महिला आरक्षण, चुनावी सुधार, स्थानीय शासन की चुनौतियाँ।
- **व्यावहारिक उपयोगिता:** क्या शोध से किसी नीति में सुधार, प्रशासनिक कार्यप्रणाली में बदलाव, या लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को मजबूत करने में मदद मिल सकती है?
- **क्षेत्रीय या स्थानीय प्रासंगिकता:** विशेषकर अगर शोध क्षेत्रीय, स्थानीय मुद्दों पर है तो यह बताना जरूरी है कि उस क्षेत्र की राजनीति, सामाजिक संरचना या प्रशासनिक व्यवस्था में यह कैसे योगदान देगा।

2. शोध के उद्देश्य (Objectives of Research Study)

शोध उद्देश्यों को स्पष्ट, संक्षिप्त और बिंदुवार लिखना चाहिए। जैसे:

- अध्ययन क्षेत्र की राजनीतिक-सामाजिक संरचना को समझना।
- चुने गए विषय से जुड़े नीति या कार्यक्रम का प्रभाव मूल्यांकन करना।
- किसी खास समस्या (जैसे मतदान में महिलाओं की भागीदारी कम होना) के कारणों और समाधान का पता लगाना।
- स्थानीय शासन, प्रतिनिधित्व, या लोकतांत्रिक भागीदारी में सुधार के सुझाव देना।
- सत्ता, नीति, और शासन के बीच अंतर्संबंधों का विश्लेषण करना।
- वंचित या हाशिए पर रह गए समूहों के राजनीतिक अनुभवों को दर्ज करना।

3. साहित्य का पुनरावलोकन (Review of Literature)

किसी भी शोध कार्य में साहित्य का पुनरावलोकन (Review of Literature) बेहद अहम भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से शोधकर्ता यह जानता है कि जिस विषय पर वह काम कर रहा है, उस पर पूर्व में क्या-क्या अध्ययन हो चुके हैं, क्या निष्कर्ष निकाले गए हैं, और किन पहलुओं पर अब भी शोध की गुंजाइश है।

राजनीति विज्ञान में साहित्य समीक्षा करते समय यह जरूरी है कि विद्वानों, नीति विशेषज्ञों, शोध संस्थानों, सरकारी रिपोर्टों, चुनाव आयोग, नीति आयोग जैसी संस्थाओं द्वारा प्रकाशित सामग्री को गंभीरता से पढ़ा जाए। इसके साथ ही सांख्यिकीय डेटा, केस स्टडी, नीति दस्तावेज, और साक्षात्कार आधारित शोधों को भी शामिल करना चाहिए।

स्रोतों की प्रामाणिकता, सत्यापन और वर्तमान संदर्भ

राजनीति विज्ञान में जिन स्रोतों का उपयोग किया जाता है — जैसे सरकारी रिपोर्ट, विधायी दस्तावेज, नीति रिपोर्ट, थिंक टैंक स्टडी, मीडिया रिपोर्ट — उनकी विश्वसनीयता का आकलन करना बहुत जरूरी है। इसके लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए:

- **प्रामाणिकता (Authenticity):** देखना चाहिए कि स्रोत आधिकारिक है या नहीं। क्या वह किसी विश्वसनीय संस्था, विद्वान, या सरकारी एजेंसी द्वारा प्रकाशित है?
- **सत्यापन (Verification):** स्रोत में जो दावे किए गए हैं, उनकी पुष्टि अन्य स्रोतों से भी होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, किसी नीति के प्रभाव का जिक्र है तो उसे संबंधित सरकारी आंकड़ों, सर्वेक्षण रिपोर्ट्स, या स्वतंत्र शोध से मिलाकर जांचें।
- **कालक्रम (Chronology):** स्रोत में दी गई जानकारी किस समयावधि की है, यह समझना जरूरी है। राजनीति विज्ञान में समय का संदर्भ कई बार नीति निर्माण और घटनाओं की व्याख्या में निर्णायक होता है।
- **वर्तमान संदर्भ (Current Context):** यह देखना जरूरी है कि जो स्रोत या डेटा आप इस्तेमाल कर रहे हैं, वह आज की स्थिति में कितना प्रासंगिक है। राजनीतिक घटनाक्रम तेजी से बदलते हैं, इसलिए संदर्भ का अद्यतन रहना आवश्यक है।

4. शोध प्रविधि (Research Method)

शोध अध्ययन में प्रयुक्त प्रविधियों का स्पष्ट और व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत करना आवश्यक होता है। इसमें शोध की रूपरेखा, निदर्शन, तथ्यों के संग्रह की विधियों और विश्लेषण के तरीके शामिल होते हैं। राजनीति विज्ञान में शोध कार्य के लिए निम्नलिखित प्रविधियों को अपनाया जा सकता है:

1. प्राथमिक डेटा संग्रह (Primary Data Collection)

- साक्षात्कार: राजनीति विज्ञान में शोध के लिए राजनीतिक प्रतिनिधियों, नीति निर्माताओं, ब्यूरोक्रेट्स, सामाजिक कार्यकर्ताओं, पंचायत सदस्यों, और नागरिकों से संरचित व अर्ध-संरचित साक्षात्कार लिए जा सकते हैं।
- सर्वेक्षण: प्रश्नावली के माध्यम से बड़े समूहों से जानकारी इकट्ठा करना, जैसे मतदान व्यवहार, राजनीतिक जागरूकता, या सरकारी योजनाओं के प्रभाव का अध्ययन।
- फोकस ग्रुप डिस्कशन (FGD): किसी विशेष समूह के विचार, अनुभव और धारणाओं को समझने के लिए सामूहिक चर्चा।

2. द्वितीयक डेटा संग्रह (Secondary Data Collection)

- सरकारी रिपोर्ट, नीति दस्तावेज, चुनाव आयोग के आँकड़े, जनगणना डेटा, विकास रिपोर्ट, संसद की कार्यवाही, और थिंक टैंक के शोध पत्र।
- विद्वतापूर्ण लेख, पत्र-पत्रिकाएं, समाचार स्रोत और विश्वसनीय ऑनलाइन डाटा बेस।

3. अभिलेखीय अनुसंधान (Archival Research)

राजनीति विज्ञान में विशेषकर नीति निर्माण, प्रशासनिक प्रक्रियाओं और ऐतिहासिक राजनीतिक घटनाओं के अध्ययन के लिए स्थानीय प्रशासन, राज्य अभिलेखागार, तथा पुस्तकालयों से अभिलेख एकत्र किए जा सकते हैं।

4. मौखिक स्रोत (Oral Sources)

- शोधार्थियों को मौखिक साक्षात्कार की तकनीक सीखनी चाहिए — जैसे उपयुक्त प्रश्न बनाना, रिकॉर्डिंग करना और साक्षात्कार का ट्रांसक्रिप्शन करना।
- हाशिए के समूहों (जैसे महिलाएं, अनुसूचित जाति/जनजाति, ग्रामीण व शहरी गरीब) के राजनीतिक अनुभवों और दृष्टिकोण को शामिल करना जरूरी है।

5. फील्ड वर्क और केस स्टडी (Field Work and Case Study)

- किसी पंचायत, नगरीय निकाय, सामाजिक आंदोलन या राजनीतिक प्रक्रिया का प्रत्यक्ष अवलोकन करें।
- अपने फील्ड वर्क को व्यवस्थित रूप से क्षेत्र नोट्स, चित्रों, ऑडियो-विजुअल रिकॉर्डिंग्स के माध्यम से प्रलेखित करें।

6. डिजिटल उपकरण और प्रस्तुतीकरण (Digital Tools and Presentation)

- शोध डेटा को प्रस्तुत करने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे Infographics, PowerPoint, वीडियो डॉक्यूमेंटेशन, Canva, आदि का प्रयोग करें।
- GIS मैपिंग, डेटा विज़ुअलाइजेशन, और अन्य डिजिटल संसाधनों का प्रयोग राजनीतिक, सामाजिक, और क्षेत्रीय विश्लेषण को प्रभावशाली बनाने में सहायक हो सकता है।

7. सामुदायिक सहयोग (Community Collaboration)

- स्थानीय राजनीतिक संगठनों, नागरिक मंचों और नीति थिंक टैंक्स के साथ सहयोग स्थापित कर डेटा संग्रह में विविधता लाना।
- शोध के नैतिक पक्षों का ध्यान रखते हुए, शोध में भाग लेने वाले समुदायों का सम्मान करना और उनकी सहमति सुनिश्चित करना आवश्यक है।

उत्तरदाताओं की पृष्ठभूमि (Profile of Respondents)
शोध के दौरान जिन उत्तरदाताओं से डेटा एकत्र किया गया है, उनकी सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक स्थिति, लिंग, आयु, पेशा, जाति, वर्ग आदि का विस्तृत विवरण देना जरूरी है। इससे यह समझने में मदद मिलती है कि जिन लोगों की राय, अनुभव या आंकड़े लिए गए हैं, वे किस सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि से आते हैं।

5. निष्कर्ष (Conclusion)

इसके अन्तर्गत शोध अध्ययन में महत्वपूर्ण तथ्यों को दिया जाना चाहिए जिससे शोध अध्ययन की एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की जानी चाहिये।

6. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (Bibliography References)

शोध प्रबन्ध में जो भी तथ्य द्वितीयक स्रोतों से लिये जाते है उनका विवरण सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में देना चाहिए।

शोध कार्य के विभिन्न चरण

शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए यहां शोध कार्य की पूरी प्रक्रिया को चरणबद्ध तरीके से समझाया गया है। राजनीति विज्ञान में शोध करते समय इन चरणों का पालन करने से शोध व्यवस्थित, सुसंगत और परिणामदायी बनता है।

1. विषय का चयन

- **रुचि:** ऐसा विषय चुनें जिसमें आपकी वास्तविक जिज्ञासा और समझ विकसित हो सके। यह आपको शोध प्रक्रिया में निरंतर सक्रिय और उत्साहित बनाए रखेगा।
- **क्षेत्र:** विषय इतना व्यापक न हो कि समय और संसाधन कम पड़ जाएं, और इतना संकीर्ण भी न हो कि पर्याप्त सामग्री ही न मिले।
- **स्रोत उपलब्धता:** चुने गए विषय पर प्राथमिक (interview, survey, policy documents) और द्वितीयक स्रोत (books, research papers, reports) उपलब्ध हैं या नहीं, इसका मूल्यांकन करें।
- **शोध प्रश्न:** विषय से जुड़ा एक स्पष्ट, केंद्रित और शोध योग्य प्रश्न तय करें, जिसका उत्तर आपका शोध तलाशेगा।

2. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

- **पृष्ठभूमि अध्ययन:** विषय से जुड़े मौजूदा शोध, पुस्तकों, शोध पत्रों, नीति दस्तावेजों आदि के जरिए विषय की गहरी समझ विकसित करें।
- **प्रमुख स्रोतों की पहचान:** विद्वानों के कार्य, सरकारी रिपोर्ट, थिंक टैंक रिपोर्ट, नीति समीक्षाएं आदि को चिन्हित करें।
- **गुणवत्ता का मूल्यांकन:** यह जांचें कि स्रोत कितने विश्वसनीय, अद्यतन और प्रासंगिक हैं।
- **सूचना का विश्लेषण:** विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी को इस तरह व्यवस्थित करें कि विषय की अब तक की समझ और शोध की संभावनाएं स्पष्ट हो जाएं।

3. परिकल्पना का निर्माण (Hypothesis Formation - यदि आवश्यक हो)

- किसी राजनीतिक प्रक्रिया, नीति, या व्यवहार से जुड़े संभावित कारणों और प्रभावों के बारे में एक तर्कसंगत पूर्वानुमान तय करें।
- परिकल्पना ऐसी होनी चाहिए जिसे आप तथ्यात्मक डेटा के आधार पर परख सकें।

4. शोध पद्धति (Research Methodology)

- **शोध डिजाइन:** केस स्टडी, सर्वेक्षण, साक्षात्कार, नीति विश्लेषण, व्यवहार अध्ययन आदि में से उपयुक्त प्रविधि चुनें।

- **डेटा संग्रह:** प्राथमिक स्रोतों जैसे साक्षात्कार, सर्वेक्षण, FGD और द्वितीयक स्रोतों जैसे रिपोर्ट, नीति दस्तावेज, शोध लेख आदि से डेटा एकत्र करें।
- **डेटा विश्लेषण:** एकत्रित डेटा का व्यवस्थित विश्लेषण करें — जैसे थीमैटिक एनालिसिस, कंटेंट एनालिसिस, सांख्यिकीय विश्लेषण — ताकि निष्कर्ष ठोस और विश्वसनीय बनें।

5. लेखन प्रक्रिया

- **संरचना:** लघु शोध प्रबंध को परिचय, साहित्य समीक्षा, शोध पद्धति, विश्लेषण, निष्कर्ष और सुझाव जैसे स्पष्ट खंडों में विभाजित करें।
- **लघु शोध स्टेटमेंट:** अपने शोध का केंद्रीय तर्क या निष्कर्ष स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करें।
- **स्रोतों का उल्लेख:** हर तथ्य, आंकड़े, उद्धरण के साथ उचित संदर्भ जरूर दें।
- **भाषा और प्रवाह:** सरल, स्पष्ट और तार्किक भाषा का प्रयोग करें। हर अनुभाग आपस में जुड़े हों।

6. निष्कर्ष (Conclusion)

- शोध में जो प्रमुख निष्कर्ष निकले हैं, उनका सार प्रस्तुत करें।
- यह बताएं कि आपका शोध राजनीतिक विमर्श, नीति निर्माण या सामाजिक व्यवहार की समझ में क्या नया जोड़ता है।
- शोध की सीमाओं का उल्लेख करें और आगे किन पहलुओं पर शोध किया जा सकता है, इसके सुझाव दें।

अतिरिक्त सुझाव

- **समय प्रबंधन:** शोध के हर चरण के लिए स्पष्ट समय-सीमा बनाएं ताकि काम समय पर पूरा हो।
- **नैतिकता:** शोध में उत्तरदाताओं की सहमति, गोपनीयता, और बौद्धिक संपदा अधिकारों का सम्मान करें।
- **फीडबैक:** अपने गाइड, सहपाठियों से नियमित प्रतिक्रिया लेते रहें।
- **पुनर्लेखन और संपादन:** ड्राफ्ट तैयार करने के बाद उसमें सुधार, भाषा संशोधन, और सटीकता पर विशेष ध्यान दें।

इन चरणों का अनुसरण करते हुए शिक्षार्थी न केवल एक उत्कृष्ट राजनीति विज्ञान लघु शोध प्रबंध तैयार कर सकते हैं, बल्कि आलोचनात्मक सोच, विश्लेषण और अकादमिक लेखन की मजबूत नींव भी रख सकते हैं।

लघु शोध प्रबंध कार्य के अपेक्षित परिणाम

1. शैक्षणिक परिणाम:

- शिक्षार्थी राजनीतिक शोध विधियों जैसे नीति विश्लेषण, संस्थागत अध्ययन, और राजनीतिक व्यवहार अनुसंधान में व्यावहारिक दक्षता प्राप्त करेंगे।
- वे यह समझने में सक्षम होंगे कि स्थानीय या क्षेत्रीय स्तर पर राजनीतिक प्रक्रियाएं, नीतियां और नेतृत्व किस प्रकार व्यापक राजनीतिक संरचनाओं — जैसे लोकतंत्र, शासन और सामाजिक न्याय — से जुड़े हैं।

2. सामुदायिक प्रभाव:

- शोध कार्य स्थानीय शासन, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, और सामाजिक मुद्दों पर आधारित ठोस साक्ष्य और सुझाव प्रदान करेगा, जिससे समुदायों में राजनीतिक जागरूकता और सहभागिता को प्रोत्साहन मिलेगा।

- यह प्रक्रिया अकादमिक जगत और समाज के बीच संवाद और सहयोग को मजबूत करेगी, जिससे नीतियों और शासन में आम नागरिकों की भागीदारी बढ़ेगी।

3. व्यक्तिगत विकास:

- शोध कार्य के माध्यम से शिक्षार्थी अपने सामाजिक-राजनीतिक परिवेश को गहराई से समझ पाएंगे, जिससे उनमें नागरिक जिम्मेदारी और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति संवेदनशीलता विकसित होगी।
- शिक्षार्थी विश्लेषण, आलोचनात्मक चिंतन, और समस्या समाधान जैसी क्षमताओं में दक्षता हासिल करेंगे, जो उनके भविष्य के करियर, सार्वजनिक जीवन और समग्र व्यक्तित्व विकास में सहायक सिद्ध होगी।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY
श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्

लघु शोध प्रबंध का शीर्षक

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की

बैचलर ऑफ़ आर्ट्स

उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबंध

शोधार्थी का नाम

पता

निर्देशक का नाम एवं

पता

नामांकन संख्या

तिथि एवं वर्ष

अध्ययन केंद्र का नाम एवं पता

Performa for Submission of Political Science Project Proposal for Approval from Facilitator

Enrollment No:………………………………………

Title of the Project:…………………………………

Date of Submission:…………………………………

Name of the Study Center:………………………….

Name of the Regional Center……………………….

Name of the Facilitator :…………………………………

Signature………… ………………………………..

Name & Address of the Facilitator:…………………….

Phone No.& Mail Id:…………………………………….

Name & Address of the Student……………………

………………………………………………………….....

…………………………………………………………

Phone No.& Mail Id :………………………………..

Approved /not approved (with remarks)…………………………………………………………

Date and Place:……………………………………….

Declaration

I hereby declare that the dissertation

entitled……………………………………………………………………………………………………

………

…………………………………………………………………………….(Write the title in Block Letters) Submitted for partial fulfilment of the BA- Vth semester to Uttarakhand Open University (UOU) is my original work and has not been submitted earlier to any other institution to fulfil the requirement for any other programme of study.I also declare that no chapter of this manuscript in whole or in part is lifted and incorporated in this report from any earlier work done by me or others.

Date :

Place :

Signature:………………………………..

Enrolment no.……………………………..

Name :………………………………………

Address:…………………………………..

…………………………………………………..

Certificate

This is to certify that Mr./Ms. ……………………………………………………...................................A student of BA Vth semester from Uttarakhand Open University (UOU)Haldwani was working under my supervision and guidance for his/her Dissertation for the course BA. His/Her Dissertation entitled……………………………………………………………………………………………………… …… ……………

Which he /she is submitting, is his /her genuine and original work.

Signature:…………………………………………

Name:………………………………………………

Address:…………………………………………….

Phone no. & mail id……………………………

(To be filled by Facilitator)

Date:

Place: